आज की अव्यक्त मुरली सार ---------- Date: 13-07-2014

बाबा ने आज समय अनुसार बच्चों को व्यर्थ समय और व्यर्थ संकल्पों का खाता समाप्त कर, बाप समान सर्व-समर्थ बनने को कहा.

बाबा की बच्चों प्रति चाहना ---

- वर्तमान समय के प्रमाण जबकि आप सभी पहले से ही समय के चैलेन्ज प्रमाण एवररेडी हो तो समय प्रमाण अब व्यर्थ का खाता नाम-मात्र यानी आटे में नमक के समान रहना चाहिए.

- समर्थ का खाता 99 परसेन्ट होना चाहिए, तब ही भविष्य नई दुनिया के लिए 100 परसेन्ट सतोप्रधान राज्य के अधिकारी बन सकेंगे.

बच्चों को बाप समान बनने के लिए क्या पुरुषार्थ करना चाहिए?

- समय प्रमाण वर्तमान स्टेज का चार्ट निकालो - समर्थ कितने और व्यर्थ कितने हैं? संकल्प और समय दोनों में समर्थ और व्यर्थ का चार्ट रखो.

- अगर अब तक भी व्यर्थ का खाता 50 या 60 परसेन्ट हैं तो ऐसे रिज़ल्ट वाले, सतयुग के आदिकाल के विश्व अधिकारी नहीं बन सकेंगे. आदिकाल के विश्व अधिकारी वही बन सकते जिन आत्माओं का वर्तमान समय, संकल्प और समय पर अधिकार हैं. ऐसी अधिकारी आत्माएं ही विश्व की आत्माओं द्वारा सतोप्रधान आदिकाल में सर्व का सत्कार प्राप्त कर सकती हैं.

- समय और संकल्पों को समर्थ बनाने के लिए हमारे संकल्प और समय पर हमारा संपूर्ण अधिकार होना जरूरी हैं. इसके लिए स्वयं कि सूक्ष्म और स्थूल

कर्मेन्द्रियॉ पर संपूर्ण क़ाबू होना जरूरी हैं - यानी यहॉ स्वराज्य अधिकारी बनना जरूरी हैं तब हम विश्व के राज्य अधिकारी बन पायेंगे.

- आत्मा को कर्मेन्दिय जित बनने के लिए अन्तरमुखी बन स्वचिन्तन में रहना चाहिए. आत्मा की जो ऑरिजिनल स्टेज हैं - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला संपूर्ण, इसके साथ आत्मा की अभी की स्टेज को चेक करो. हम अपने सारे दिन की स्थिति द्वारा स्वयं को जान सकते हैं की आत्मा कहा तक स्वराज्य अधिकारी बनी हैं. क्योंकि इसके हिसाब से आत्मा आदिकाल (सतयुग) के अधिकारी बनेगी या सतयुग के मध्यकाल की अधिकारी बनेगी - वह जान सकते हो.

- जबकि लक्ष्य हैं सतयुग के आदिकाल के अधिकारी बनने का तो उसी प्रमाण अपने वर्तमान को सदा समर्थ बनाओ. आदिकाल के अधिकारी बनने के लिए स्व की स्थिति की चैकिंग बहुत जरूरी हैं.

- बड़ी सच्चाई से चेक करो हम अपने स्वयं के वर्तमान समय अनुसार पुरुषार्थ से स्वयं संतुष्ट हैं? अगर नहीं हैं तो जो स्वयं से संतुष्ट नहीं होगा वह विश्व की आत्माओं को संतुष्ट करने वाला कैसे बन सकेगा.

- सतयुग के आदिकाल में आत्मायें तो क्या प्रकृति भी संतुष्ट हैं, क्योंकि संपूर्ण हैं. तो संतुष्टमणी बनो.

- बाबा के अन्त में कहा, यज्ञ में स्थूल सेवा तो हम सब उमंग उल्लास से करते हैं लेकिन अब स्वयं की सेवा और विश्व की सेवा (फरिस्तेपन को इमर्ज कर मनसा सेवा) भी हों. स्वयं के प्रति भी रहमदिल और विश्व के प्रति भी रहमदिल बनो. दोनों साथ-साथ चाहिए. ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email – a.brahmin.soul@gmail.com .